Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 5 | Issue : 5 | May 2019



UCHATTAR MADHYAMIK STHAR KE RAJKIYA EVAM NIJI VIDHYALAYO KE VIDHYARTHIO KE SAMAYOJAN KA TULNATMAK ADHYAYAN

उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Suman Kumari Yadav

Principal, Astha College of Education, Kotputli, Jaipur, India.

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विभिन्न आयाम अनुसार समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में राजस्थान के जयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। आंकड़ो के संकलन हेतु डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर. पी. सिंह. द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन परिसूची का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना :

शिक्षा द्वारा मानव को ज्ञानवान, कला–कौशल युक्त ओर सभ्य बनाया जाता है। यह माता के समान पालन–पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यो में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है। अर्थात् जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त्र होने पर कुम्हला जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भांति खिल उठता है तथा अशिक्षित रहने पर दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के अन्धकार में डूबा रहता है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। अतः इसके जीवन में समायोजन का अत्यधिक महत्व है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियां आती रहती है और वह अपने वातावरण एवं परिस्थितियों से समायोजन करने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों से अपने को समायोजित कर लेता है, वह प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नही कर पाता वह असंतोष, कुण्ठा, द्वन्द, एवं तनाव का शिकार हो जाता है और वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है, जिसका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। समाज परिवर्तनशील है और इसके कारण नित्य नई समस्याऐं उत्पन्न होती रहती हैं। इन समस्याओं के प्रति अपने को समायोजित करने के लिए समायोजन क्षमता का होना आवश्यक है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य भी व्यक्ति को इस योग्य बनाना है, जिससे वह समाज में अपने को भली–भांति समायोजित कर सके। व्यक्ति को व्यवस्थित एवं सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए परिस्थितियों से समायोजन करना आवश्यक होता है। व्यक्ति में समायोजन की प्रक्रिया घर से प्रारम्भ होती है और यह जीवन पर्यन्त चलती रहती है। वह जहाँ भी जाता है अथवा रहता है उसे वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार अपने को समायोजित करना पड़ता है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए समायोजन आवश्यक है। एक सुसमायोजित व्यक्ति ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। अधिकांशतः यह देखा गया है कि जो बालक पिछड़े होते है वे कुसमायोजन का शिकार होते है और यदि इनकी समस्याओं पर ध्यान न दिया जाये तो यह और भी पिछड़ते जाते है और परिणाम होता है कि छात्र का कक्षा में बार–बार फैल होना तथा बीच में ही पढ़ाई छोड़ देना। इसलिए यह आवश्यक है कि सही समय पर इन विद्यार्थियों की पहचान की जाए तथा उचित निर्देशन एवं परामर्श द्वारा इनकी समस्याओं का निराकरण किया जाये। व्यक्ति की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसका समायोजन समाज एवं वातावरण से समुचित रूप से हो। शिक्षा इस उद्धेश्य को पूर्ण करने में सहायता करती हैं। मानव व्यवहार में परिवर्तन लाना एवं उसका शोधन करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है।

समस्या कथन :

''उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

- ❖ उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ❖ उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ❖ उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :

- ❖ उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ❖ उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में

अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

❖ उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान के जयपुर संभाग के उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत कुल 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें 300 विद्यार्थी राजकीय विद्यालय से तथा 300 विद्यार्थी निजी विद्यालय से लिए गये है।

प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉ. ए.के.पी. सिन्हा तथा डॉ. आर.पी.सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची को लिया गया है। इस प्रश्नावली में तीन क्षेत्रों (संवेगात्मक, सामजिक, शैक्षिक) में विद्यार्थियों के समोयाजन का मापन किया गया है।

परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता :

इस परीक्षण की विश्वसनीयता अनेक विधियों की सहायता से ज्ञात की गई। परिणामस्वरूप अर्द्ध–विच्छेद विधि से प्राप्त विश्वसनीयता गुणांक संवेगात्मक समायोजन 0.94, समाजिक समायोजन 0.93, शैक्षिक समोयाजन 0.96 तथा योग 0.95 प्राप्त हुए। परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि द्वारा प्राप्त विश्वसनीयता गुणांक संवेगात्मक समायोजन 0.96, समाजिक समायोजन 0.90, शैक्षिक समायोजन 0. 93 तथा योग 0.93 प्राप्त हुए। के0आर0. सूत्र–20 के द्वारा विश्वसनीयता गुणांक संवेगात्मक समायोजन 0.92 समाजिक समायोजन 0.92, शैक्षिक समायोजन 0.96 तथा योग 0.94 प्राप्त हुए। पद–विश्लेषण वैद्यता गुणांक इस परीक्षण के पद के लिए बाइ सीरीयल विधि से ज्ञात किए गए जो 0.001 स्तर पर सार्थक थे।

सांख्यिकी विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत निर्धारित उद्देश्यों के संदर्भ में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक मान का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

तालिका – 1 : उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपातों की सार्थकता को दर्शाती तालिका

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	300	8.99	1.73	1.64	0.05 स्तर पर असार्थक
2	गैर–सरकारी	300	8.76	1.61		

$(df = N_1 + N_2 - 2 = 300+300-2 = 598)$

उपर्युक्त तालिका 1 में उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 8.99 एवं 8.76 प्राप्त हुआ है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.73 व 1.61 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 1.64 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 598 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन में दिये गये मान 1.96 से कम है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर नही होता है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका – 2 : उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपातों की सार्थकता को दर्शाती तालिका

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1	राजकीय	300	8.75	1.94	2.60	0.05 स्तर पर सार्थक
2	निजी	300	9.86	2.11		

$(df = N_1 + N_2 - 2 = 300+300-2 = 598)$

उपर्युक्त तालिका 2 में उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 8.75 एवं 9.86 प्राप्त हुआ है तथा मानक विचलन क्रमशः 1.94 व 2.11 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.60 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 598 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन में दिये गये मान 1.96 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर होता है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

तालिका – 3 : उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपातों की सार्थकता को दर्शाती तालिका

क्र.सं.	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक मान	सार्थकता स्तर
1	राजकीय	300	9.46	2.27	2.13	0.05 स्तर पर सार्थक
2	निजी	300	7.50	1.35		

$(df = N_1 + N_2 - 2 = 300+300-2 = 598)$

उपर्युक्त तालिका 3 में उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 9.46 एवं 7.50 प्राप्त हुआ है तथा मानक विचलन क्रमशः 2.27 व 1.35 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.13 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 598 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन में दिये गये मान 1.96 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर होता है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :

- उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर जो परिणाम आये उनके आधार पर राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी अधिक समायोजित होते है।

- उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर जो परिणाम आये उनके आधार पर निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

- उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने से प्राप्त परिणामों के आधार पर पाया गया कि निजी विद्यालय में अध्ययनतर विद्यार्थियों की तुलना मे राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन उत्तम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. मंगल, एस.के. (1996): शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना।
2. कपिल, एच.के. (2004): ''अनुसंधान विधियाँ'', हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
3. केवट, आर.एन. (2009): ''समेकित शिक्षा के अन्तर्गत सामान्य एवं विशेष विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एव सामाजिक समायोजन का अध्ययन'' परिपेक्ष्य, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 16, अंक 1, अप्रैल 2009, पृष्ठ 109–113
4. भटनागर, मधुमोहिनी (2009): ''छात्राओं की समायोजन समस्या एवं उनका सामाजिक आर्थिक स्तर शैक्षिक निष्पति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 29, अंक 2, पृष्ठ 16
5. सिंह, अरूण कुमार (2010): ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'' मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
6. गैरेट, हेनरी ई. (2011): ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग'' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
7. राय, पारसनाथ (2012): ''अनुसंधान परिचय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
8. शुक्ला, संजीव कुमार (2016): विद्यालयों में सामान्य एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों का समायोजन, परिपेक्ष्य, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशास विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 23, अंक 2, अगस्त 2016, पृष्ठ 105–112